IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

डिजिटल एवं आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में स्वामी विवेकानंद और श्री अरविंद घोष के शैक्षिक दर्शन की उपयोगिता एवं चुनौतियाँ

सोनिया मित्तल[1] and डॉ. भूपेंद्र सिंह चौहान[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र - विभाग

[2]प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र - विभाग

विक्रांत विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.), भारत

सारांश

वर्तमान युग विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंटरनेट, डिजिटल प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन शिक्षण के तीव्र विस्तार का युग है। शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल तकनीक ने ज्ञान तक पहुँच, शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया, मूल्यांकन, संचार तथा व्यक्तिगत अधिगम के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन किया है। किंतु केवल तकनीकी दक्षता को शिक्षा का अंतिम उद्देश्य मान लेना शिक्षा के मानवीय, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पक्ष को कमजोर कर सकता है। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानंद और श्री अरविंद घोष के शैक्षिक दर्शन की समकालीन उपयोगिता विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है। स्वामी विवेकानंद शिक्षा को मनुष्य के अंतर्निहित पूर्णत्व की अभिव्यक्ति, चरित्र-निर्माण, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और राष्ट्र-निर्माण का माध्यम मानते थे। दूसरी ओर, श्री अरविंद का 'समग्र शिक्षा' का विचार व्यक्ति के शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, मानस/अंतरात्मिक तथा आध्यात्मिक विकास को एकीकृत करने पर बल देता है। आधुनिक शोध भी यह संकेत करता है कि श्री अरविंद की समग्र शिक्षा में समग्र विकास, अनुभवात्मक अधिगम, बहुविषयकता और विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण जैसे तत्व वर्तमान शिक्षा सुधारों से महत्वपूर्ण रूप से जुड़े हैं।

मुख्य संकेतक: शैक्षिक दर्शन, डिजिटल शिक्षा, आधुनिक शिक्षा, समग्र शिक्षा, चरित्र निर्माण, मूल्य शिक्षा, विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

परिचय

इक्कीसवीं सदी में शिक्षा की प्रकृति तेजी से परिवर्तित हुई है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, डिजिटल कक्षाओं, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, मुक्त शैक्षिक संसाधनों, वर्चुअल प्रयोगशालाओं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अनुकूली अधिगम प्रणालियों ने शिक्षा को पारंपरिक कक्षा की सीमाओं से बाहर निकाल दिया है। डिजिटल तकनीक ज्ञान के व्यापक प्रसार, व्यक्तिगत अधिगम और दूरस्थ शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है। यूनेस्को की 2023 ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट के अनुसार तकनीक शिक्षा में पहुँच, गुणवत्ता, समावेशन और प्रबंधन को प्रभावित कर सकती है, लेकिन इसके प्रभाव के प्रमाण हर संदर्भ में समान नहीं हैं; इसलिए तकनीक का प्रयोग शिक्षार्थी की आवश्यकताओं, समानता, प्रमाण-आधारित निर्णय और स्थायित्व को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।
ऐसी परिस्थिति में यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि आधुनिक डिजिटल शिक्षा का अंतिम उद्देश्य क्या होना चाहिए? क्या शिक्षा केवल सूचना प्राप्त करने, डिजिटल कौशल विकसित करने और रोजगार प्राप्त करने तक सीमित होनी चाहिए, अथवा उसे व्यक्ति के चरित्र, विवेक, रचनात्मकता, आत्मानुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व और आंतरिक विकास को भी सुनिश्चित करना चाहिए? इसी प्रश्न का उत्तर भारतीय शैक्षिक चिंतन में स्वामी विवेकानंद और श्री अरविंद के दर्शन से प्राप्त किया जा सकता है।

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को केवल सूचनाओं के संचय के रूप में स्वीकार नहीं किया। उनके अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति में निहित शक्ति और पूर्णता को अभिव्यक्त करना है। वे ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जो चरित्र का निर्माण करे, मन की शक्ति को बढ़ाए, बुद्धि का विस्तार करे और व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा होने योग्य बनाए (विवेकानंद, 2018)। उनके शिक्षा-दर्शन में आत्मविश्वास, एकाग्रता, अनुशासन, सेवा, नैतिकता और आत्मनिर्भरता का विशेष स्थान है। आधुनिक अध्ययनों में भी विवेकानंद के शिक्षा-विचार को 'मनुष्य-निर्माण' तथा 'चरित्र-निर्माण' की दृष्टि से विश्लेषित किया गया है।

श्री अरविंद घोष का शिक्षा-दर्शन इससे आगे बढ़कर व्यक्ति के समग्र विकास की अवधारणा प्रस्तुत करता है। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल मानसिक विकास नहीं, बल्कि शरीर, जीवन-शक्ति, मन, अंतःचेतना और आध्यात्मिक चेतना का क्रमिक एवं संतुलित विकास है। अरविंद के अनुसार शिक्षक का कार्य विद्यार्थी पर ज्ञान थोपना नहीं, बल्कि उसके भीतर स्थित विकास की संभावनाओं को जागृत करने में सहायता करना है। इस दृष्टिकोण में विद्यार्थी की व्यक्तिगत गति, रुचि, क्षमता और अनुभव को महत्त्व मिलता है।

अतः वर्तमान डिजिटल परिवेश में इन दोनों विचारकों के दर्शन का अध्ययन इसलिए आवश्यक है क्योंकि डिजिटल संसाधन ज्ञान तक पहुँच को बढ़ा सकते हैं, किंतु ज्ञान का विवेकपूर्ण उपयोग, चरित्र, आत्मनियंत्रण,

सामाजिक संवेदनशीलता और जीवन-दृष्टि स्वतः विकसित नहीं होती। डिजिटल शिक्षा की सफलता के लिए तकनीकी साधनों के साथ मानवीय और मूल्यपरक दृष्टिकोण आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं: -

1. स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन की प्रमुख अवधारणाओं का विश्लेषण करना।
2. श्री अरविंद घोष के समग्र शिक्षा-दर्शन का अध्ययन करना।
3. डिजिटल एवं आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में दोनों विचारकों के शैक्षिक सिद्धांतों की उपयोगिता का विश्लेषण करना।
4. चरित्र-निर्माण, मूल्य शिक्षा, आत्मनिर्भरता और समग्र विकास के संदर्भ में उनके विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
5. डिजिटल शिक्षा के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों के संदर्भ में दोनों दार्शनिक दृष्टिकोणों का परीक्षण करना।
6. भारतीय शिक्षा व्यवस्था में तकनीक और मानवीय मूल्यों के संतुलित समन्वय के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक अनुभवजन्य सर्वेक्षण के स्थान पर द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए स्वामी विवेकानंद तथा श्री अरविंद के मूल लेखन, शिक्षा-दर्शन संबंधी पुस्तकों, शोध-पत्रों, शिक्षा संबंधी नीतिगत दस्तावेजों तथा डिजिटल शिक्षा से संबंधित अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों का विश्लेषण किया गया है।

सामग्री का विषय-वस्तु विश्लेषण करते हुए शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षक की भूमिका, विद्यार्थी की भूमिका, चरित्र-निर्माण, समग्र विकास, आत्मनिर्भरता, तकनीकी शिक्षा और मूल्य-आधारित अधिगम जैसे प्रमुख आयाम निर्धारित किए गए हैं। तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि पारंपरिक भारतीय शिक्षा-दर्शन आधुनिक डिजिटल परिवेश में किस प्रकार पुनर्व्याख्यायित किया जा सकता है।

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, July 2026 Impact Factor: 8.2

स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन

स्वामी विवेकानंद का शिक्षा-दर्शन मनुष्य की आंतरिक शक्तियों के विकास पर आधारित है। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के भीतर अनेक संभावनाएँ विद्यमान होती हैं और शिक्षा का कार्य उन संभावनाओं को विकसित करना है। इसलिए शिक्षा को केवल परीक्षा, प्रमाणपत्र या रोजगार प्राप्ति का माध्यम मानना उनके विचारों की मूल भावना के विपरीत होगा।

1. मनुष्य-निर्माण शिक्षा

विवेकानंद के शिक्षा-दर्शन का केंद्रीय तत्व मनुष्य-निर्माण है। उनके लिए शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को मानसिक रूप से मजबूत, नैतिक रूप से दृढ़, सामाजिक रूप से उत्तरदायी और आत्मनिर्भर बनाए। आधुनिक डिजिटल शिक्षा में इस सिद्धांत का अर्थ है कि ऑनलाइन पाठ्यक्रम और डिजिटल सामग्री केवल विषयगत जानकारी न दें, बल्कि समस्या-समाधान, निर्णय क्षमता, सहयोग, नैतिक विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व को भी विकसित करें।

2. चरित्र-निर्माण

विवेकानंद शिक्षा में चरित्र को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे। वर्तमान डिजिटल वातावरण में यह विचार और अधिक प्रासंगिक है क्योंकि विद्यार्थी को प्रतिदिन बड़ी मात्रा में सूचनाओं, सोशल मीडिया सामग्री, कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित सामग्री और विभिन्न डिजिटल प्रभावों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में डिजिटल साक्षरता के साथ नैतिक एवं आलोचनात्मक डिजिटल साक्षरता आवश्यक है। विद्यार्थी को यह समझना चाहिए कि कौन-सी सूचना विश्वसनीय है, डिजिटल संसाधनों का उचित उपयोग कैसे किया जाए और तकनीक का उपयोग सामाजिक हित में किस प्रकार किया जाए।

3. आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता

विवेकानंद के अनुसार शिक्षा व्यक्ति में आत्मविश्वास और अपने पैरों पर खड़े होने की क्षमता उत्पन्न करनी चाहिए। आधुनिक शिक्षा में यह विचार उद्यमिता, कौशल विकास, नवाचार, डिजिटल साक्षरता और जीवनपर्यंत अधिगम से जोड़ा जा सकता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों को अपनी गति से सीखने, विभिन्न विषयों का अध्ययन करने और वैश्विक संसाधनों तक पहुँचने का अवसर देते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

4. एकाग्रता और मानसिक अनुशासन

डिजिटल उपकरणों के अत्यधिक उपयोग के कारण विद्यार्थियों में ध्यान-विचलन की समस्या बढ़ सकती है। ऐसे संदर्भ में विवेकानंद का एकाग्रता एवं मानसिक अनुशासन पर बल अत्यंत उपयोगी है। डिजिटल शिक्षा में 'अधिक सामग्री' उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं है; विद्यार्थी को चयन, एकाग्रता और गहन अधिगम की क्षमता भी विकसित करनी चाहिए।

श्री अरविंद घोष का शैक्षिक दर्शन

श्री अरविंद घोष का शिक्षा-दर्शन समग्र शिक्षा की अवधारणा पर आधारित है। वे शिक्षा को व्यक्ति की चेतना के क्रमिक विकास की प्रक्रिया मानते हैं। उनके विचारों में शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, अंतःचेतनात्मक और आध्यात्मिक विकास के बीच संतुलन आवश्यक है। समकालीन अध्ययनों में भी अरविंद की समग्र शिक्षा को आधुनिक बहुविषयक एवं अनुभवात्मक शिक्षा से जोड़ा गया है।

1. समग्र विकास

अरविंद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल बुद्धि का विकास नहीं होना चाहिए। शरीर स्वस्थ हो, भावनाएँ संतुलित हों, इच्छाशक्ति विकसित हो, विचार स्पष्ट हों और व्यक्ति में उच्चतर चेतना का विकास हो इन सभी का समन्वय आवश्यक है। डिजिटल शिक्षा में इस विचार को 'होलिस्टिक लर्निंग' के रूप में अपनाया जा सकता है।

2. विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा

अरविंद शिक्षा में विद्यार्थी की व्यक्तिगत प्रकृति, रुचि और विकास की गति को महत्त्व देते हैं। डिजिटल तकनीक इस विचार को लागू करने में विशेष रूप से सहायक हो सकती है क्योंकि डिजिटल प्लेटफॉर्म व्यक्तिगत अधिगम-पथ, अनुकूली सामग्री और स्व-गति अधिगम के अवसर उपलब्ध करा सकते हैं।

3. शिक्षक की भूमिका

अरविंद के विचार में शिक्षक केवल सूचना देने वाला व्यक्ति नहीं बल्कि मार्गदर्शक और सहायक है। यह विचार आधुनिक डिजिटल शिक्षा में अत्यंत उपयोगी है। जब इंटरनेट पर विशाल मात्रा में जानकारी उपलब्ध है, तब शिक्षक का महत्त्व समाप्त नहीं होता; बल्कि उसकी भूमिका सूचना प्रदाता से बदलकर मार्गदर्शक, मेंटर, मूल्य-निर्माता और अधिगम-सुविधादाता की हो जाती है।

4. अनुभवात्मक एवं रचनात्मक अधिगम

अरविंद का शिक्षा-दर्शन विद्यार्थी को स्वयं अनुभव करने और अपनी क्षमताओं का विकास करने की दिशा में प्रेरित करता है। डिजिटल सिमुलेशन, वर्चुअल प्रयोगशाला, प्रोजेक्ट-आधारित अधिगम, डिजिटल पोर्टफोलियो, ऑनलाइन सहयोग और रचनात्मक गतिविधियाँ इस दृष्टिकोण को आधुनिक रूप दे सकती हैं।

डिजिटल शिक्षा में दोनों दार्शनिकों की उपयोगिता

स्वामी विवेकानंद और श्री अरविंद के विचारों में कई ऐसे तत्व हैं जिन्हें आधुनिक डिजिटल शिक्षा में सफलतापूर्वक समाहित किया जा सकता है।

शैक्षिक आयाम	स्वामी विवेकानंद	श्री अरविंद	डिजिटल शिक्षा में उपयोगिता
शिक्षा का उद्देश्य	मनुष्य एवं चरित्र निर्माण	समग्र मानव विकास	ज्ञान के साथ व्यक्तित्व विकास
विद्यार्थी	आत्मविश्वासी एवं आत्मनिर्भर	व्यक्तिगत क्षमता वाला विकासशील व्यक्ति	स्व-गति एवं व्यक्तिगत अधिगम
शिक्षक	प्रेरक एवं मार्गदर्शक	सहायक एवं सुविधा	मेंटर एवं सीखने में मदद करने वाला
अधिगम	एकाग्रता एवं अनुभव	समग्र एवं अनुभवात्मक विकास	डिजिटल प्रोजेक्ट एवं इंटरैक्टिव लर्निंग
मूल्य	नैतिकता, सेवा, अनुशासन	चेतना एवं आंतरिक विकास	डिजिटल नागरिकता एवं नैतिक AI उपयोग
लक्ष्य	आत्मनिर्भर व्यक्तित्व	समग्र व्यक्तित्व	जीवनपर्यंत अधिगम

आधुनिक शिक्षा में उपयोगिता

1. मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षा

आज डिजिटल शिक्षा में विषयगत दक्षता के साथ डिजिटल नागरिकता, नैतिकता और जिम्मेदारी की आवश्यकता है। विवेकानंद के चरित्र-निर्माण सिद्धांत को डिजिटल नागरिकता से जोड़ा जा सकता है। विद्यार्थियों

ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

को साइबर नैतिकता, सत्यापन, सम्मानजनक ऑनलाइन व्यवहार, बौद्धिक संपदा और जिम्मेदार सूचना-साझाकरण का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

2. समग्र व्यक्तित्व विकास

अरविंद का समग्र शिक्षा सिद्धांत डिजिटल शिक्षा को केवल स्क्रीन-आधारित गतिविधि बनने से रोक सकता है। ऑनलाइन शिक्षण के साथ योग, खेल, कला, संगीत, सामाजिक सेवा, रचनात्मक गतिविधियों और प्रत्यक्ष अनुभव को जोड़ा जा सकता है। इससे शिक्षा में शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास का संतुलन स्थापित किया जा सकता है।

3. कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मानवीय उपयोग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधुनिक शिक्षा को व्यक्तिगत और अनुकूली बना सकती है, लेकिन AI विद्यार्थी के स्थान पर सोचने लगे तो आलोचनात्मक चिंतन कमजोर हो सकता है। विवेकानंद का आत्मशक्ति एवं स्वतंत्र चिंतन का विचार AI के विवेकपूर्ण उपयोग का आधार बन सकता है। इसी प्रकार अरविंद का चेतना-केंद्रित दृष्टिकोण यह संकेत देता है कि तकनीक मानव विकास की सहायक होनी चाहिए, मानव विकास का स्थान लेने वाली शक्ति नहीं।

4. आत्मनिर्भर अधिगम

डिजिटल संसाधनों ने विद्यार्थियों को स्व-अध्ययन के व्यापक अवसर दिए हैं। ई-पुस्तकें, ऑनलाइन व्याख्यान, डिजिटल पुस्तकालय और खुले शैक्षिक संसाधन आत्मनिर्भर अधिगम को बढ़ावा देते हैं। यह विवेकानंद के आत्मनिर्भरता संबंधी विचारों के साथ संगत है।

5. बहुविषयक शिक्षा

श्री अरविंद के समग्र दृष्टिकोण में ज्ञान को संकीर्ण विषयगत सीमाओं में बंद करने के बजाय व्यापक विकास की दिशा में देखा जाता है। वर्तमान बहुविषयक शिक्षा, प्रोजेक्ट-आधारित अधिगम और अंतर्विषयक डिजिटल पाठ्यक्रम इस दृष्टिकोण को व्यवहारिक रूप प्रदान कर सकते हैं। हाल के अध्ययनों में अरविंद की समग्र शिक्षा और NEP 2020 के बीच बहुविषयक, अनुभवात्मक एवं समग्र शिक्षा के स्तर पर महत्वपूर्ण साम्य की चर्चा की गई है।

DOI: 10.48175/568

डिजिटल एवं आधुनिक शिक्षा की प्रमुख चुनौतियाँ

1. डिजिटल विभाजन

डिजिटल शिक्षा की सबसे बड़ी चुनौती तकनीकी संसाधनों तक असमान पहुँच है। सभी विद्यार्थियों के पास समान इंटरनेट सुविधा, स्मार्टफोन, कंप्यूटर या शांत अध्ययन वातावरण नहीं होता। UNESCO ने भी तकनीकी शिक्षा के संदर्भ में समानता और वंचित समूहों की पहुँच को केंद्रीय चिंता के रूप में रेखांकित किया है।

2. तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता

तकनीक उपयोगी साधन है, लेकिन यदि शिक्षा पूरी तरह डिजिटल उपकरणों पर निर्भर हो जाए तो शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, प्रत्यक्ष संवाद और सामाजिक अनुभव प्रभावित हो सकते हैं। UNESCO ने स्पष्ट किया है कि डिजिटल तकनीक को मानवीय संपर्क का स्थान लेने के बजाय उसे सहयोग देने वाले साधन के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए।

3. चरित्र एवं मूल्य शिक्षा की उपेक्षा

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म विषयगत ज्ञान प्रदान कर सकते हैं, लेकिन चरित्र, संवेदनशीलता, अनुशासन, सहयोग और सेवा जैसे गुणों के विकास के लिए सामाजिक एवं मानवीय अनुभव आवश्यक हैं। इसलिए विवेकानंद की मूल्य-आधारित शिक्षा को डिजिटल शिक्षा के साथ जोड़ना आवश्यक है।

4. स्क्रीन समय और मानसिक एकाग्रता

डिजिटल अधिगम में अत्यधिक स्क्रीन उपयोग विद्यार्थियों के ध्यान, दिनचर्या और सामाजिक व्यवहार को प्रभावित कर सकता है। विवेकानंद का एकाग्रता एवं मानसिक अनुशासन का विचार इस चुनौती से निपटने के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

5. शिक्षक-प्रशिक्षण

डिजिटल उपकरण उपलब्ध होना पर्याप्त नहीं है। शिक्षकों को डिजिटल पेडागोजी (पढ़ाने का तरीका), AI टूल्स, ऑनलाइन असेसमेंट, साइबर सुरक्षा, डिजिटल एक्सेसिबिलिटी और ब्लेंडेड लर्निंग की पर्याप्त समझ होनी चाहिए। UNESCO की रिपोर्ट भी शिक्षक की तैयारी को शिक्षा में तकनीक के प्रभावी उपयोग की आवश्यक शर्तों में शामिल करती है।

स्वामी विवेकानंद और श्री अरविंद के विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण

दोनों विचारकों के शिक्षा-दर्शन में व्यक्ति के आंतरिक विकास को केंद्रीय स्थान प्राप्त है। विवेकानंद का मुख्य जोर मनुष्य-निर्माण, चरित्र-निर्माण, आत्मविश्वास, शक्ति और आत्मनिर्भरता पर है, जबकि श्री अरविंद का दृष्टिकोण समग्र विकास, चेतना के विकास और शरीर-मन-आत्मा के एकीकरण पर अधिक केंद्रित है। दोनों शिक्षा को केवल सूचना-प्राप्ति नहीं मानते।

डिजिटल शिक्षा के संदर्भ में विवेकानंद का दर्शन विद्यार्थियों को तकनीक का अनुशासित, नैतिक और उद्देश्यपूर्ण उपयोग सिखाने में सहायक हो सकता है। दूसरी ओर, अरविंद का दर्शन डिजिटल शिक्षा में व्यक्तिगत अधिगम, रचनात्मकता, अनुभवात्मकता और समग्र व्यक्तित्व विकास को आधार प्रदान कर सकता है।

इस प्रकार दोनों विचारों का समन्वय एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित कर सकता है जिसमें तकनीकी दक्षता + नैतिक चेतना + आलोचनात्मक चिंतन + आत्मनिर्भरता + समग्र विकास को समान महत्त्व मिले।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद और श्री अरविंद घोष के शैक्षिक दर्शन आज भी आधुनिक शिक्षा के लिए अत्यंत उपयोगी वैचारिक आधार प्रदान करते हैं। विवेकानंद का मनुष्य-निर्माण, चरित्र-निर्माण, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और मानसिक अनुशासन का दृष्टिकोण डिजिटल युग में विद्यार्थियों को जिम्मेदार और नैतिक डिजिटल नागरिक बनाने में सहायक हो सकता है। श्री अरविंद का समग्र शिक्षा-दर्शन शिक्षा को शरीर, मन, भावनाओं, चेतना और व्यक्तित्व के व्यापक विकास से जोड़ता है।

डिजिटल शिक्षा ने ज्ञान की पहुँच को व्यापक बनाया है, लेकिन तकनीक अपने आप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की गारंटी नहीं देती। डिजिटल विभाजन, शिक्षक-प्रशिक्षण की कमी, तकनीकी निर्भरता, स्क्रीन-आधारित अधिगम, डेटा एवं गोपनीयता, AI आधारित शैक्षणिक अनियमितता तथा मानवीय संपर्क में कमी जैसी चुनौतियाँ गंभीर हैं। UNESCO का विश्लेषण भी इस बात पर बल देता है कि तकनीक का उपयोग तभी सार्थक है जब वह उपयुक्त, समानतापूर्ण, प्रमाण-आधारित और टिकाऊ हो तथा मानवीय शिक्षण-संबंधों को प्रतिस्थापित न करे। अतः आधुनिक भारतीय शिक्षा के लिए सबसे उपयुक्त मार्ग तकनीक और परंपरा के बीच संघर्ष नहीं, बल्कि तकनीकी आधुनिकता और भारतीय मानवीय शिक्षा-दर्शन का रचनात्मक समन्वय है। विवेकानंद से चरित्र, शक्ति और आत्मनिर्भरता तथा श्री अरविंद से समग्रता, रचनात्मकता और चेतना-विकास के सिद्धांत ग्रहण करके डिजिटल तकनीक को मानवीय विकास का साधन बनाया जा सकता है। इस प्रकार ऐसी शिक्षा व्यवस्था

विकसित की जा सकती है जो विद्यार्थियों को केवल डिजिटल रूप से दक्ष न बनाए, बल्कि उन्हें विवेकशील, नैतिक, रचनात्मक, आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक भी बनाए।

संदर्भ सूची

1. अरविंद, श्री. (1990). शिक्षा पर श्री अरविंद. श्री अरविंद आश्रम प्रकाशन विभाग।
2. अरविंद, श्री. (1997). भारत में शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली. श्री अरविंद आश्रम प्रकाशन विभाग।
3. अरविंद, श्री. (1999). द ह्यूमन साइकिल. श्री अरविंद आश्रम ट्रस्ट।
4. अरविंद, श्री. (2005). द लाइफ डिवाइन. श्री अरविंद आश्रम प्रकाशन विभाग।
5. अरविंद, श्री. (2013). द ह्यूमन साइकिल, द आइडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी एंड वॉर एंड सेल्फ-डिटरमिनेशन. श्री अरविंद आश्रम प्रकाशन विभाग।
6. अल्फासा, मिर्रा. (2002). शिक्षा. श्री अरविंद आश्रम प्रकाशन विभाग।
7. दत्ता, आर. (2025). स्वामी विवेकानंद के मनुष्य-निर्माण एवं चरित्र-निर्माण संबंधी शैक्षिक विचार। रिसर्च रिव्यू जर्नल ऑफ सोशल साइंस, 5(2), 1–10.
8. कश्यप, एन. (2024). श्री अरविंद के दर्शन में नैतिक एवं चारित्रिक विकास: शिक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण। इंटीग्रल रिसर्च, 1(9), 164–170.
9. रानी, ए. (2016). श्री अरविंद घोष का शिक्षा-दर्शन। इंटरनेशनल एजुकेशन एंड रिसर्च जर्नल, 2(10), 1–3.
10. किस्कू, ए. (2026). श्री अरविंद की समग्र शिक्षा और भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक तुलनात्मक दार्शनिक विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, 3(2), 114–133.
11. ठाकुर, के. (2026). श्री अरविंद की समग्र शिक्षा और उच्च शिक्षा के लिए इसके निहितार्थ: NEP-2020 के संदर्भ में एक व्यवस्थित विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटीज.
12. विवेकानंद, स्वामी. (2018). स्वामी विवेकानंद की संपूर्ण रचनावली. अद्वैत आश्रम।
13. विवेकानंद, स्वामी. (2019). शिक्षा और राष्ट्र निर्माण. रामकृष्ण मिशन प्रकाशन।
14. रामकृष्ण मिशन. (2020). स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार एवं उनके अनुप्रयोग. रामकृष्ण मिशन प्रकाशन।

15. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार।
16. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग. (2020). उच्च शिक्षा में डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षण संबंधी दिशानिर्देश. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
17. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (2021). स्कूली शिक्षा में डिजिटल शिक्षण-अधिगम के लिए मार्गदर्शिका. एनसीईआरटी।
18. यूनेस्को. (2023)। शिक्षा में प्रौद्योगिकी: किसकी छूट पर? वैश्विक शिक्षा पर्यवेक्षण रिपोर्ट 2023। यूनेस्को।
19. यूनेस्को. (2023)। वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट 2023: शिक्षा में प्रौद्योगिकी किसकी शर्तों पर एक उपकरण? यूनेस्को।
20. यूनेस्को. (2023)। शिक्षा में प्रौद्योगिकी: नीति और व्यवहार के लिए सिफ़ारिशें। वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट।